

न समજो मित्र अभी कितना अंधेरा,  
 जभी जाग जाओ तबी है सबेरा.  
 गઈ सो गई मत गई को बुलाओ,  
 नया दिन हुआ है नया डग बढ़ाओ.  
  
 न सोयो न लाओ वदन पर मलिनता,  
 तुम्हारे करो में है कल की सफलता,  
 जली ज्योत बनकर ढलेगा अंधेरा...जभी जाग..  
  
 पिओ मित्र शोखे समझकर के पानी,  
 हुःखोने लीझी है सुखोंकी कहानी,  
 नहीं पढ़ सका कोई किस्मत का कासा,  
 नहीं जानता था कब पलट जाय पासा,  
 यदा जो मिला मंजिलोंका बसेरा...जभी जाग..  
  
 व्यथाएं मिलें तो उन्हे तुम हुलारो,  
 प्रगति प्रेम से मिले तो पुकारो,  
 हुःखों की सदा उम्र छोटी रही है,  
 सदाश्रम सुखोंके ही बोती रही है,  
 सदा पतझड़ों ने बहारों को टेरा...जभी जाग..  
  
 गुरुदेव के द्वारा नया दिन मिला है  
 जो निधियां विखरती वो लुटो हमेंशा,  
 अनेक ग्रंथ मंथनसे हीरा निकाला,  
 तुम जौहरी बनके कर दो उजाला,  
 जरा भुल की तो नरक में बसेरा...  
 जभी जाग जाओ तबी है सवेरा.  
 अभी जाग जाओ अभी है सवेरा.

